कहानी : कोंकणी

प्रतिदिनके अनुभूत जीवनके गहरे निरीक्षण एवं संवेदनशील क्षमताका कहानी संकलन

कृति : सपनफुलां
कृतिकार : मीना काकोडकार

समीक्षिका :
डॉ. चन्द्रलेखा डि सोजा

यह कहानी-संग्रह जीवनके विभिन्न प्रकारके स्वप्नोंका संवेदनात्मक और वैचारिक रूप है। लेखिका कहानीके अतिरिक्त अन्य विधाओं नाटक लेख आदिमें भी समान रूपसे गतिशील हैं। इनके लेखनकी विशेषता है कि ये मानव-मनका चित्रण करतीहैं। प्राय: कहानियोंमें स्त्रियोंके सुख-दु:खके प्रसंग हैं और नन्हें बच्चोंके मानसिक जगत्का चित्रण है। स्वयं लेखिकाके अनुसार कहानी जीवनके विभिन्न रूपों और पक्षोंका चित्र होतेहैं। बचपनके रंग यौवनके रंगसे भिन्न होते हैं। यौवनके रंगसे बुढ़ापेका रंग भिन्न होताहै। आयु के साथ भावनाएं बदलती, समस्याएं बदलतीहैं, समस्याओंके समाधान बदलतेहैं। समस्या और समाधान समयके साथ बदल जातेहैं।

प्रस्तुत संग्रहमें बचपनसे संबंधित और स्त्री जगत्की कहानियोंके अतिरिक्त प्रकृति विषयक और वर्ग संघर्ष की कहानियाँ हैं। प्रथम वर्गमें 'नन्हा पंछी', 'नटखट', 'पप्पा आप हँसतेहो', कहानियां हैं। 'नन्हा पंछी'में मौसी औरएक बालकके अन्तर्जगतका चित्रहै। मौसीके कोई बच्चा नहीं है पर वह एक मातृहीन बच्चेको मांका प्यार देतीहै। बच्चा मौसीको मांका सम्मान तो देता है, पर मांका प्यार नहीं दे पाता। प्यार और सम्मान की इस दुविधाका चित्रण कलात्मक ढंगसे हुआहै।

'पप्पा आप हँसतेहो' में एक युवा विधवा दुबारा विवाह करना चाहतीहै। तब उसकी नन्हीं बच्ची

अपने पापाकी तस्वीरके साथ बातचीत करतीहै, अपने दादा-दादीसे प्रश्न करतीहै। मांसे पूछतीहै, "मम्मी, आप फिर विवाह कर रहीहो?" सुभाने अचानक प्रश्न पूछा, मम्मीको समझमें नहीं आता, क्या उत्तर दे। 'क्यों मम्मी?' प्रश्नका उत्तर कैसे दिया जाये, मम्मी सोच रहीथी। "आप पप्पाको भूल गयीं?" सुभाके छोटेसे जगत्की हलचल पूरी कहानी व्यक्त करती जाती है।

दूसरे वर्गकी कहानियां हैं: 'खिड़कीके उस पार', 'तिलम्मा तुम जा रहीहो?', 'नया जन्म', 'चंदनका वृक्ष', 'बंधन मुक्ति' आदि। इनमें भिन्न-भिन्न समस्याएं उठायी गयीहैं। कुमारावस्थामें, विवाहसे पहले लड़कीके व्यक्तित्वकी अपनी अलग पहचान होतीहै पर विवाह होतेही जैसे पूरे परिवारके लिए तो जिंदा होतीहै, पर अपने लिए वह कहीं खो जातीहै। बहुतों को तो इस 'खोनेका' अनुभवही नहीं होता। ऐसा क्यों होताहै? विवाहके बाद पुरुषके व्यक्तित्वको कुछभी खोना नहीं पड़ता बल्कि वह अपना विकास और कर सकताहै। सब, ज्यादातर स्त्रियां अधिकतर चंदनकी प्रतिमा बन जातीहैं, जिन्हें बहुमूल्य कपड़ोंमें अल्मारीमें सजाकर रखा जाताहै। प्रतिमाको अल्मारीमें रखाजा सकताहै पर जीवित स्त्रीको अपने व्यक्तित्वके अस्तित्वको, सुगन्धित पदार्थकी भांति सहेजना होताहै। जैसे चंदन का वृक्ष अपने तनेके गर्भमें सुगंध संजोये रहताहै, तनेको छीलनेपर उस चंदनकी यह सुगंध वातावरणमें फैल जातीहै। इसी प्रकार प्रत्येक स्त्रीके लिए आवश्यक है कि वह अपनी चंदनकी सुगंधको पहचाने और उसे फैलाये! हमारे समाजमें ऐसा कितनी स्त्रियां कर पातीहैं? इसी समस्याका समाधान खोजनेका प्रयत्न किया गयाहै।

'नया जन्म' में एक बहूकी मूक व्यथाको चित्रित किया गया गयाहै। आजभी हमारे समाजमें बेटीका जन्म उल्लासके साथ स्वीकार नहीं किया जाता। बेटा और बहू डाक्टरके पास जांच कराने जातेहैं। पता चलताहै कि गर्भमें बेटी है। सास और बेटा बहू को अबार्शन करानेको कहतेहैं। जीवनमें पहली बार बहू अपनी बच्चीके लिए घरवालोंसे विद्रोह करतीहै। प्रस्तुत कहनीमें मां और बच्चीकी बातोंको मृदुल रूप में व्यक्त किया गयाहै —

"—ए ऽऽ तुम कौन? बेटा या बेटी?

—मैं बेटा—

—सच?

—कैसे बनाया? मम्मी मैं बेटी—

—तुम्हें बेटी अच्छी नहीं लगती?

—क्यों नही अच्छी लगेगी? बेटा या बेटी तुम मेरी ही संतान हो।

अंतमें सबसे कह देतीहै कि बेटा हो या बेटी, मैं अपनी संतानको खोना नहीं चाहती। (पृ. ११२)

तीसरे वर्गकी कहानियोंकी चर्चाके प्रसंगमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कोंकणी साहित्यमें प्रकृति का विशेष स्थान है। यह ठीकभी है क्योंकि यहां समुद्रका खुला किनारा, नारियल, काजूके पेड़, आस-पासकी हरियाली, मांडबी और जुवारीकी बहती धारा क्षण-क्षणमें परिवर्तित होती प्रकृतिका नया रूप संवारतीहै। पर औद्योगीकरणके दबावमें प्रकृतिका परिवर्तित रूप कोंकणी साहित्यमें दिखायी नहीं देता। बहुत कम साहित्यकारोंने संघर्षात्मक प्रकृतिको निहारकर उसे अभिव्यक्ति दीहै। इस कहानी-संग्रहमें, प्रकृतिका सुन्दर रूपही प्रस्तुत किया गयाहै। 'साज', 'पारिजात···परिजात', 'रे किन्नरा' आदि।

'रे किन्नरा' कहानीमें पक्षियोंकी मधुर ध्वनि, वर्षाके वे दिन, गरजता सागर, सागर किनारे गीली रेत, नारियलके पेड़, उसके पत्ते, पत्तोंकी सरसराहट, पत्तोंसे झरते वे मोती कण, सूर्यकी सुनहली झांकी इस वातावरणमें उस किन्नर पक्षीकी मधुर तान प्रकृति प्रेमीको विभोर कर देतीहै। इस सागर-किनारेकी उस विशाल अट्टालिकाके निर्माणमें कितने कल्पवृक्षोंको धराशायी कर दिया गया होगा? समुद्र किनारे घूमने वाले, खानेपीनेकी चीजोंसे उसे गंदा कर रहेहैं, वहां सीमेंट-कंकरीटका जंगल बढ़ रहाहै। जितने वृक्ष काटे जातेहैं उतने धरतीसे फिर फूटने चाहियें, यह बिचार समकालीन कोंकणी साहित्यमें लुप्त है। यहां हिप्पियों ने नया संसार हीं उभाराहै जिससे हमारे बच्चे पथ-भ्रष्ट हो रहेहैं। पर यह विकृति यहांके साहित्यमें प्राय: उपलब्ध नहीं है।

चौथा वर्ग वर्ग-संघर्षकी कहानियोंका है।

'ऐसे स्वप्न--ऐसी जिंदगी' का गरीब किसानका बेटा पढ़ना चाहताहै, पिता भी उसे पढ़ाना चाहताहै पर दादा इसलिए विरोध करतेहैं कि पढ़ाईके बाद हमारे देशके युवकको खेतमें काम करना अखरताहै।

हमारा शिक्षणभी बहुत बार हमें ठगताहै। पिताने अपना सपना पूरा करनेके लिए बेटेको पढ़नेकी अनुमति दे दी। अचानक एक दिन पिता अकस्मात् घायल होते हैं, चलने-फिरने योग्य नहीं रहते, खेतमें काम बाकी पड़ाहै, पर पितामें यह साहस नहीं है कि वह बेटेको खेतमें जानेके लिए कहे। बेटा स्वयं दादाजीके पास जाताहै, और कहताहै "दादाजी—अपना खेत मैं बोऊँगा।" आनन्द उसे देखते ही रह गये। अपने सपने, रामूकी पढ़नेकी लगन—सब कुछ उनकी आंखोंके सामने घूमने लगा। मैं बहुत पढ़ूँगा, कहनेवाला रामू आज विश्वाससे खेत बोनेकी बात कर रहाथा।—बाहर रामू दादाजीको, खेतमें जानेके लिए पुकार रहाहै, घर के भीतर पिता एक कोनेमें पड़ेहैं। देहलीजपर खड़े दादाजीकी दृष्टि रामूके बस्तेपर जातीहै, उस लटकते बस्तेपर जातीहै, उस लटकते बस्तेको छातीसे लगाकर आंसू बहातेहैं। (पृ. ४०-४१)। सपने देखना संजोना प्रत्येकको अच्छा लगताहै पर बास्तविक धरतीसे टकराकर उन सपनोंकी बिखरन मनुष्यको तोड़कर रख देती है। दादा, पिता पुत्र, तीनों अपने-अपने दृष्टिकोण से सही लगतेहैं।

इस प्रकार पूरा कहानी संग्रह विभिन्न क्षेत्रोंकी समस्याओंकी चर्चा करताहै। रचनाकार सामाजिक समस्याओंकी ओर ध्यान खींचकर रह जाताहै, यही उसकी सीमाहै। □